गौहरजान, जुलै का महिना और मुंबई

[रहेगी याद मुझको, बम्बई वालों की मेहमानी]

जुलै २०१०. पीछली शताब्दीकी जानीमानी और मशहूर तवायफ, 'कलकत्तेवाली गौहरजान' को याद करनेका और उनके ध्वनिमुद्रित गानोंको सुननेका महिना. 'माय नेम इज गौहरजान' यह उदघोषणा हर गानेके अंतमे सुनाई देती है. हालही में इसी नामसे प्रकाशित और बहुचर्चित अंग्रेजी पुस्तक के विमोचन कारन, मुंबईमें जुलाई महिनेमें दो श्रवणसत्र संपन्न हुए. एक अंधेरीके 'भवन्स कल्चरल सेंटर'मे और दूसरा दक्षिण मुंबईके 'एन. सी. पी. ए.' के टाटा थिएटर संकुलमें. बुजुर्ग मुंबईकर, पीछले पिढीके संगीतकार और संगीतप्रेमी रसिकजन बडी संख्यामें उपस्थित थे. सौ साल पहलेकी एक 'कोठेवाली', केवल अपनी ध्वनिमुद्रित गायनसे सभीको किस तरह खींचकर ले आयी, यह अनुभव करनेकी बात थी. बहुतही घीसी पीटी और पुरानी रिकार्डस सुनते सुनते श्रोता दंग रह गए. मेरा मन कुछ भटकने लगा और सौ साल पुराने माहौल मे चला गया.

जुलै १९०७. ग्रामोफोन रिकार्डसके माध्यमसे 'कलकत्तेवाली गौहरजान' हिंदुस्थानमें और बाहर भी काफी मशहूर हो गयी थी. १९०५ से १९०८ के बीच वे कई बार बंबई आयी और इस शहरपर फिदा हो गयी. उसका प्रमुख कारन था उनके प्रेमी 'अमृत केशव नायक'. वे गुजराथी रंगभूमीकी एक बडी हस्ती थे. इसके अलावा घोडोंकी रेसकी बडी शौकीन थी. रेसके सीझनमे दिनभर वे दोनों महालक्ष्मी रेसकोर्सपर दिखाई देते थे. रातके समय 'आम' आदमीके मनोरंजनके लिए बोरीबंदर स्टेशनके सामनेवाले 'कॅपिटॉल'

थिएटरमें गाने नाचनेके जलसे करती थीं. यहाँसे नजदीक सौ साल पुराना, 'खास' लोगोंका टाऊन हॉल (एशियाटिक लायब्ररी) था. उसमें जलसेके लिए गौहरजानको जुलै १९0७ मे खास निमंत्रित किया गया. उसमें शामील बडी हस्तियोंमे फिरोजशाह मेहता, सेठ गोकुलदास, सेठ रतन जैसे प्रतिष्ठित लोग थे. उस जलसेमे मुंबई शहरकी तारीफ करनेवाली एक नज़्म उसने पेश की. उसमे बडी होशियारीसे इन सब सेठ लोगोंके नाम जोड दिये थे. इतनाही नही, तो उसमे किंग एडवर्ड 'कयामत' तक सलामत रहे ऐसी दुवा भी माँगी थी. आगे चलके १९१२ मे ग्रामोफोन कंपनीने इसी गानेकी एक ध्वनिमुद्रिका बनायी और एक विशेष लेबलपर वितरित भी कर दी. लेबलपर 'जुलै १९0७ में टाऊन हॉल मे गाया हुआ गाना' ऐसा लिखा भी है. गानेके आखिरमे, "माय नेम इज गोहरजान. यह गाना कम्मालका है. फिरोजशाह मेहताकी तारीफमे" यह वाक्य वे बोलती है. हालहीमें इस दुर्लभ ध्वनिमुद्रिका का मुद्रण प्राप्त हुआ है. रिकार्ड नं. पी. ३६५. 'धुन कल्याण कव्वाली'. आठ अंतरेवाला यह गाना सुनना एक अनोखा अनुभव है. 'कलाकारोंकी मेहमानी और कद्र करनेवाले' मुंबई शहरका खास स्थान इस गानेमे वर्णन किया है. इस जलसेके कुछ दिन बाद अमृत केशव नायक अचानक चल बसे. गुजराथी रंगभूमीके वे एक बडे कलाकार थे. आज ऊनके नामका रास्ता 'पी. एम. रोड', यानिकी सर फिरोजशाह मेहता रोडके खादी भंडार की पीछली गलीमे है. कुछ दो सौ से भी ज्यादा गानोंकी रिकार्डे पीछे छोडकर गौहरजान १९३0 में चल बसी. 'टाऊन हॉल' की इमारत दो सौ साल पार कर चुकी है. 'कॅपिटॉल' सिनेमाकी काले पत्थरवाली सुंदर इमारत गर्दुल्लोंने घेर ली है. अपने ऊद्धारकर्ताकी राह देख रही है.

डॉ.सुरेश चांदवणकर, नेव्हीनगर, कुलाबा, मुंबई. २५ जुलै २०१०
chandvankar.suresh@gmail.com cell - 9920813336

धुन कल्याण कव्वाली (रेकॉर्ड नं. पी.३६५)

चलो गुलजार आलम मे हवाये फ़ज़ल रहमानी
फला फूला खड़ा हर काम इसे रखना नाखल़ बोस्तानी...१

हैं तो यह जहाँमे अब हाथ गर दस्तयों भी मन
ग़र्ज़ हिंन्दू मुसलमां सब के सब है ख़न्दा पेशानी...२

जहिइये मजलिस हूं जिन के सद्र सरभी दोर का ऐसा
वह बर्क़ अंदाज गोकुल दास जी इक़बाल हों बानी...३

रहे आबाद या रब बम्बई तू और बम्बई वाले
कहाँ मैं एक मुसाफिर और कहाँ यह कद्र सुलतानी...४

मुझे इज्ज़त जो बक्षी और जो है कद्र की मेरी
रहेगी याद मुझको बम्बई वालों की मेहमानी...५

जहाँ के स्कूल के मालिक रतनसी सेठ जी साहब
करें बच्चोंकी ख़िदमत और करे उन की निग़हबानी...६

खुदाया शाह एडवर्ड को तू रख जिंदा कयामत तक
रहे कायम हुकूमत और होवे फ़ज़ले रब्बानी . . .७

दुआ पर सर झुका कर ख़तम करता हूँ कलाम अपना
रहें सब महरबान उन पर हो सब पर फ़ज़ल एवहानी . . .८

माय नेम इज गोहरजान .
यह गाना कम्मालका है
फिरोजशाह मेहताकी तारीफमे

Miss Goher-Jan.